॥ जैन भवन ॥

# तित्थयर

वर्ष : २९ अंक : ६ सितम्बर २००५

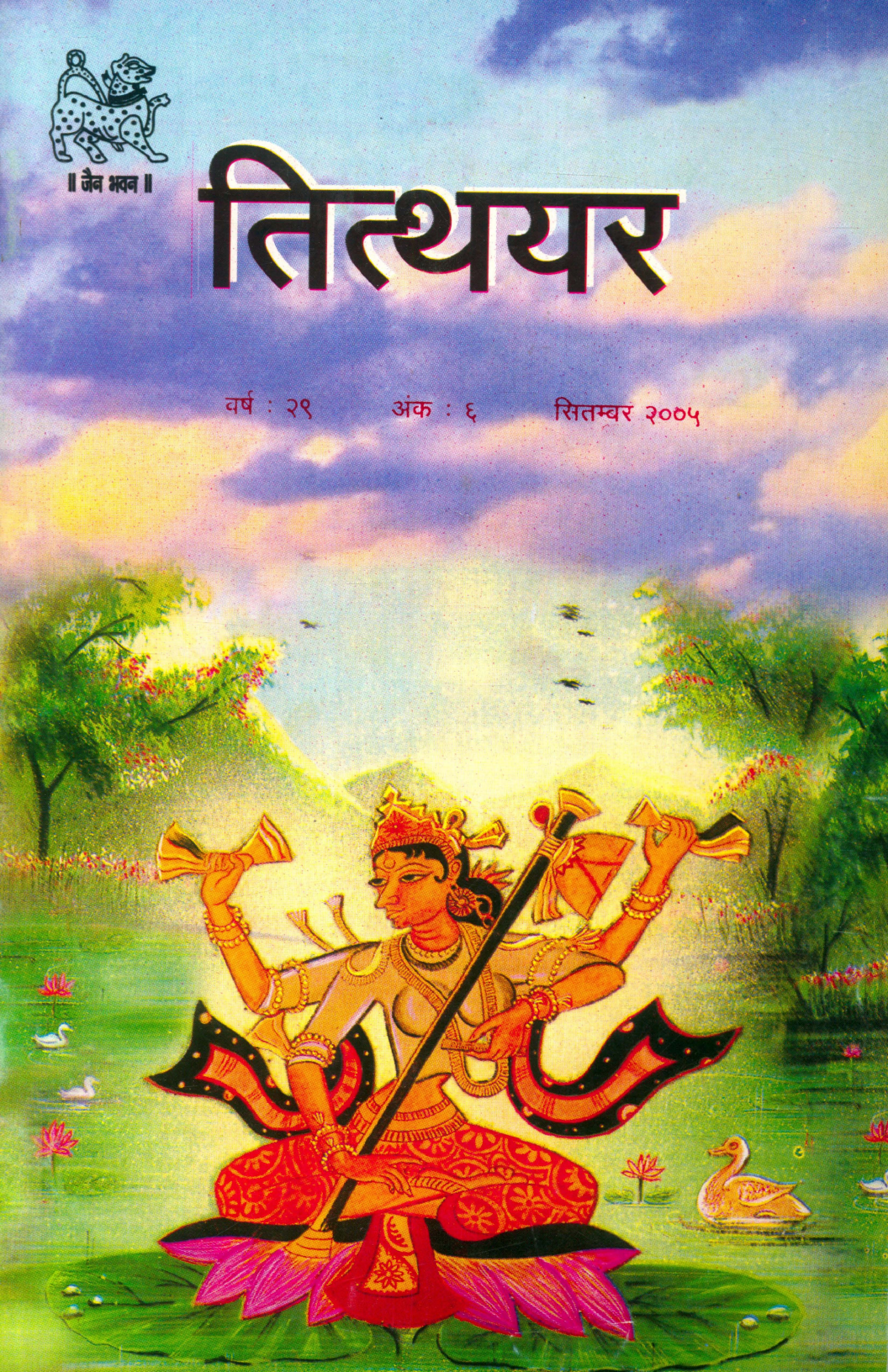

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

# Sethia Oil Industries Ltd.

***Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.***

**Plant**
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

**Registered Office**
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

**Executive Office**
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

# तित्थयर

*श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका*

वर्ष - २९ अंक - ६, सितम्बर २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

# अनुक्रमणिका


| क्र. सं. | लेख | लेखक | पृ. सं. |
|---|---|---|---|
| १. | ध्यान और कायोत्सर्ग | डॉ. सागरमल जैन | ३५३ |
| २. | शंका समाधान | आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज | ३५८ |
| ३. | मृत्यु | डॉ. सागरमल जैन | ३६७ |
| ४. | वैर का विपाक | | ३६९ |
| ५. | टूथपेस्ट का जहर | डॉ. कान्ति जैन | ३८० |


**मूल्य - १०.०० रूपये**

**कवरपृष्ठ :** जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।


**Composed by:**
**Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007**

# ध्यान और कायोत्सर्ग

डॉ. सागरमल जैन

सामान्यतया जैन परमपरा में ध्यान और कायोत्सर्ग को एक मान लिया जाता है। अनेक ग्रन्थों में इस शब्दों का प्रयोग पर्यायवाची के रूप में होता रहा है, किन्तु यदि हम आगमिक प्रमाणों के आधार पर इस विषय की गंभीर चर्चा करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ध्यान और कायोत्सर्ग अलग-अलग है।

उत्तराध्ययन के तीसवें तप नामक अध्ययन में तप के दो भाग किए गए हैं– (१) बाह्यतप (२) आभ्यान्तर तप

पुनः उसमें आभ्यान्तर तप के छः भेदों की चर्चा करते हुए ध्यान और कायोत्सर्ग या व्युत्सर्ग को अलग-अलग बताया गया है।

ध्यान और कायोत्सर्ग में सबसे महत्त्वपूर्ण अन्तर यह है कि ध्यान चित्तवृत्तियों की एकाग्रता एवं आत्मसजगता की साधना की सूचक है। जबकि कायोत्सर्ग का सम्बन्ध देहातीत होने की साधना से है। ध्यान में चित्तवृत्ति की एकाग्रता और उनके प्रति सजग होने या उनका दृष्टा होने की साधना की जाती है। जबकि कायोत्सर्ग में बाह्यविषयों और शरीर के प्रति निर्ममत्व भाव की साधना की जाती है। ध्यान में चित्तवृत्तियों शुभ और अशुभ दोनों दिशाओं में केन्द्रित होने की सम्भावना बनी रहती है। यही कारण है कि आगमों में आर्त और रौद्र को भी ध्यान कहा गया है। चित्तवृत्ति का अशुभ दोनों दिशाओं में केन्द्रित होने की सम्भावना बनी रहती है। यही कारण है कि आगमों में आर्त और रौद्र को भी ध्यान कहा गया है। चित्तवृत्ति का अशुभ योगों में प्रवर्तन अर्थात् आर्त्त और रौद्र ध्यान में प्रवर्तन मूलतः देहावसक्ति के कारण ही होता है। छट्ठे गुणस्थान तक होने वाले आर्तध्यान और रौद्रध्यान देहासक्ति के कारण ही उत्पन्न होते है। अतः चित्तवृत्ति को अशुभ से विमुख करके शुभ या शुद्ध से जोड़ने के लिए ध्यान के साथ साथ कायोत्सर्ग की साधना अपेक्षित है।

ध्यान की स्थिरता भी तभी सम्भव है जब व्यक्ति देहावसक्ति से ऊपर हो क्योंकि देहभाव ही ध्यान के विचलन का मुख्य हेतु रहा हुआ है। यही कारण है कि आभ्यन्तर तपो की चर्चा करते हुए ध्यान के बाद ही कायोत्सर्ग को स्थान दिया गया है। ध्यान में आत्मसजगता के अभाव में यदि चित्तवृत्ति शुभ या अशुभ में प्रवहमान हो अथवा शुभ या अशुभ में एकाग्र हो तो आश्रव एवं बन्ध की सम्भावना बनी रहती है जबकि कायोत्सर्ग सदैव ही बन्ध और निर्जरा का हेतु है। ध्यान अपनी उच्चतम स्थितियों में जब साधक सजग या अप्रमत्त चेता मात्र ज्ञाता दृष्टा भाव में होता है तभी वह संवर का हेतु बनता है किन्तु निर्जरा तो तभी सम्भव है जब ध्यान कायोत्सर्ग पूर्वक होता है।

जैन कर्मसिद्धान्त स्पष्ट रूप से यह बताता है कि अप्रमत्त संयम गुणस्थान से अग्रिम आध्यात्मिक ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होते हुए साधक जैसे जैसे आगे बढ़ता है उसके नवीन कर्मों के आश्रव रुकते जाते है। यहाँ तक कि ग्यारवें गुणस्थान में मात्र सातावेदनीय कर्म का ही आश्रव रहता है। यद्यपि मोक्षमार्ग की साधना में संवर की साधना आवश्यक है। किन्तु जब तक पूर्व कर्मों की निर्जरा न हो, वे सत्ता में बने रहते है तब तक पतन की सम्भावना समाप्त नहीं होती है। ध्यान मूलतः चित्तवृत्ति की एकाग्रता अथवा सजगता है। इससे अप्रमत्त साधक के आश्रव तो रुक सकते हैं किन्तु पूर्वबद्ध कर्मों की सत्ता तभी समाप्त होती है जब निर्जरा हेतु प्रयत्ज और पुरुषार्थ हो। ध्यान चित्तवृत्ति का संयम है क्योंकि जैसे-जैसे आत्म सजगता बढ़ती है वैसे-वैसे मन निष्क्रिय होता जाता है। मन के निष्क्रिय होने से अन्य योग प्रवृत्तियाँ शिथिल होती जाती है क्योंकि ज्ञाता दृष्टा भाव और कर्त्ता भोक्ता भाव एक साथ संभव नहीं है अतः ध्यान से आश्रव एवं तद्धन्य बन्ध निरोध होकर संवर की साधना में साधक क्रमशः आगे बढ़ता जाता है किन्तु सत्ता में रहे हुए कर्मों की निर्जरा तो तभी सम्भव होती है जबकि व्यक्ति की रागात्मकता टूटे। क्योंकि कर्मों की सत्ता राग पर आधारित होती है। कायोत्सर्ग का मूल लक्ष्य इस रागात्मकता को तोड़ता है। जैसे-जैसे ध्यान कायोत्सर्ग में परिणत होता है बाह्य जागतिक उपादानों एवं शरीर के प्रति निर्ममत्व की

साधना जगती है, देहासक्ति भी टूटती जाती है वैसे-वैसे सत्ता में रहे हुए कर्मदलिकों की निर्जरा की गति प्रतिसमय अनन्त गुणा होती जाती है।

योगशास्त्र में जिन आठ योगांगों की चर्चा की है उनमें ध्यान के बाद समाधि का क्रम है। वस्तुतः कायोत्सर्ग समाधि की साधना है। वह कर्म निर्जरा हेतु आसक्ति या रागात्मकता के प्रहाण सम्बन्धी पुरुषार्थ की अवस्था है। कर्मों की स्थिति और उनका रस या अनुभाम कषाय या रागद्वेष पर आधारित होता है। राग-द्वेष में भी द्वेष राग के आधार पर जीवित रहता है अतः साधना का मूल लक्ष्य राग का प्रहाण और वीतरागता की उपलब्धि है।

कायोत्सर्ग मात्र देह का शिथिलीकरण नहीं है इसी प्रकार वह केवल चित्तवृत्ति की सजगता और निष्क्रियता की अवस्था भी नहीं है वह आत्मपुरुषार्थ की स्थिति है, जिसमें साधक अपनी ममत्व बुद्धि का प्रहाण या निरसन करता हुआ देहातीत अवस्था की ओर ऊपर उठता है। अतः कायोत्सर्ग का स्थान ध्यान से ऊपर है। वह राग के प्रहाण और वीतरागता की उपलब्धि का साधन है। यह वीतरागता की उपलब्धि ही सम्पूर्ण जैनसाधना का चरम लक्ष्य है। ध्यान और कायोत्सर्ग का लक्ष्य भी वीतरागता की उपलब्धि है किन्तु यह वीतरागता की उपलब्धि ध्यान के चार प्रकारों में केवल अन्तिम प्रकार शुक्लध्यान के श्री अन्तिम दो चरण में ही सम्भव है और वीतरागता ही दुःखविमुक्ति का एकमात्र उपाय है, क्योंकि जब तक राग है तभी तक दुःख है। दुःख विमुक्ति हेतु राग का प्रहाण आवश्यक है। वीतरागता वस्तुतः राग-द्वेष का प्रहाण है। साम्ययोग की साधना भी उसी का दूसरा नाम है। जैन साधना साम्ययोग या वीतरागता की साधना है। दूसरे शब्दों में कहे तो जैनसाधना का अथ और इति दोनों ही साम्ययोग की इस साधना में ही है जिसे पारम्परिक शब्दों में सामायिक की साधना कहा जाता है।

भगवती सूत्र में कहा गया है कि आत्मा समत्व स्वरूप है और समत्त्व की उपलब्धि ही आत्मा का साध्य है। हमारे चित्त का विचलन कषायों के कारण है अतः चित्त की एकाग्रता तभी संभव है जब व्यक्ति कषायों के आवेग से ऊपर उठे। कषायों के आवेगों से ऊपर उठने का यह प्रयत्न ही

लोढ़ाजी की दृष्टि में वीतराग योग है। व्यक्ति का समत्व से विचलन क्रोध, मान, माया एवं लोभ रूप कषायजन्य आवेगों और राग द्वेष की वृत्तियों के परिणामस्वरूप होता है और इन आवेगों का जन्मस्थान हमारा चित्त होता है। ध्यान साधना के प्राथमिक चरणों में आवेगों के प्रति निमित्त मिलने पर सर्वप्रथम उन निमित्तों के प्रति प्रतिक्रिया को रोकना होता है। ये प्रतिक्रियाएँ कायिक, वाचिक और मानसिक तीनों ही हो सकती है। इसलिए वीतराग ध्यान एवं कायोत्सर्ग की साधना का प्रारम्भ ही निम्न शब्दों के साथ होता है।

ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

इस सूत्र का तात्पर्य है मैं काया से स्थिर होकर वचन से मौन होकर अर्थात् चित्तवृत्तियों की भागदौड़ को स्थिर कर पर के प्रति अपनी ममत्व वृत्ति का विसर्जन करता हूँ। वस्तुतः यह सूत्र वीतराग ध्यान साधना का आधारभूत सूत्र है। इसमें कायोत्सर्ग और ध्यान दोनों ही समाहित है। प्रथम तीन सूत्रों का सम्बन्ध तीनों योगों की स्थिरता अर्थात् ध्यान से है जबकि अन्तिम सूत्र का सम्बन्ध ममत्त्व वृत्ति के विसर्जन से है अर्थात् कायोत्सर्ग से है। सामान्यतयः 'अप्पाणं वोसिरामि' का अर्थ आत्मा का विसर्जन न होकर आत्मभाव या अपनेपन के भाव का विसर्जन है, ममत्व वृत्ति का विसर्जन है। ममत्त्व वृत्ति का विसर्जन समत्व की साधना और वीतरागता की उपलब्धि का आवश्यक तत्त्व है। कायोत्सर्ग मात्र शरीर का शिथिलकरण या स्थिरीकरण नहीं है वह कर्म निर्जरा के माध्यम से वीतरागता की उपलब्धि का प्रयत्न या पुरुषार्थ है। वीतरागता की साधना ही समत्त्व योग है। समत्त्वयोग सभी प्रकार की योगसाधनाओं का चरम लक्ष्य है। इसकी पुष्टि करते हुए गीता में स्पष्टरूप से कहा गया है कि 'समत्वं योगोच्यते' अर्थात् समत्व ही योग है। हिन्दू परम्परा के एक अन्य ग्रन्थ श्रीमद् भागवत् में समत्वयोग की सर्वोपरित को सिद्ध करते हुए यह कहा गया है कि— 'समत्वमाराधनमच्चुतस्य' अर्थात् समत्व (समभाव) की आराधना ही परमात्मा की आराधना है। इससे यही सिद्ध होता है कि समत्व की उपलब्धि ही ध्यान और कायोत्सर्ग की साधना का मूलभूत लक्ष्य है। ध्यान कायोत्सर्ग तक

पहुँचने की प्रक्रिया या पद्धति है। ध्यान् अर्थात् योगों की चंचलता को समाप्त कर कायोत्सर्ग अर्थात् निर्ममत्व की साधना से ही वीतरागता की उपलब्धि सम्भव है।

ध्यान साधना के क्षेत्र में आसन और प्राणायाम की भूमिका मात्र इतनी ही है कि आसन कायस्थिरता को साधने का उपाय है तो प्राणायाम मन को एकाग्रता करने का उपाय है। इस प्रकार आसन, प्राणायाम, ध्यान और कायोत्सर्ग में एक सहसम्बन्ध है। साथ ही उनमें क्रम भी है। उस क्रम में आसन प्रथम अंग है और कायोत्सर्ग अन्तिम है। राग के प्रहाण का जो दुःख विमुक्ति का उपाय कहा गया है वह व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृष्टियों से समुचित है, क्योंकि समस्त दुःखों का जन्म ममत्त्व वृत्ति के कारण ही होता है। जिन जिन वस्तुओं और व्यक्तियों पर हम ममत्त्व का आरोपण करते हैं उनके साथ घटने वाली घटनाएं ही हमारे दुःख का कारण होती है। दुःख विमुक्ति प्रत्येक प्राणी का कारण होता है। दुःख विमुक्ति प्रत्येक प्राणी का लक्ष्य होता है, किन्तु जब तक दुःखों के मूलकारण आसक्ति का उच्छेद नहीं होता, तब तक दुःख विमुक्ति संभव नहीं है।

आसन प्राणायाम, ध्यान और कायोत्सर्ग ये सभी साधना के चरण है, आसन के बिना प्राणायाम, प्राणायाम के बिना ध्यान और ध्यान के बिना कायोत्सर्ग संभव नहीं है। प्राणायाम के बिना ध्यान असंभव है, क्योंकि श्वास प्रेक्षा से चित्त स्थिर होता है और बिना ध्यान अर्थात् आत्मसजगता के कायोत्सर्ग संम्भव नहीं है।

पुनः ध्यान हेतु भी कषायों का उपशान्त होना आवश्यक है। किन्तु कषायों को उपशान्त करने के लिए व्यत्सर्ग अर्थात् ममत्त्व वृत्ति का त्याग आवश्यक है । अतः ध्यान के बिना कायोत्सर्ग और कायोत्सर्ग के बिना ध्यान सम्भव नहीं है। जैन साधना में ये परस्पर सापेक्ष रूप से रहे हुए है।

———O———

# शंका समाधान

आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज

श्रावस्ती के 'कोष्ठक चैत्य' से विहार कर भगवान् महावीर ने जनपद की ओर प्रयाण किया। विचरते हुए प्रभु 'मेढ़ियाग्राम' पहुँचे और ग्राम के बाहर सालकोष्ठक चैत्य में पृथ्वी शिला-पट्ट पर विराजमान हुए। भक्तजन दर्शन-श्रवण एवं वंदन करने आये। भगवान् ने धर्म-देशना सुनाई।

जिस समय भगवान् साल कोष्ठक चैत्य में विराज रहे थे, गोशालक द्वारा प्रक्षिप्त तेजोलेश्या के निमित्त से भगवान् के शरीर में असाता का उदय हुआ, जिससे उनको दाह-जन्य अत्यन्त पीड़ा होने लगी। साथ ही रक्तातिसार की बाधा भी हो रही थी। पर वीतराग भगवान् इस विकट वेदना में भी शान्तभाव से सब कुछ सहन करते रहे। उनके शरीर की स्थिति देखकर लोग कहने लगे कि गोशालक की तेजोलेश्या से पीड़ित भगवान् महावीर छह माह के भीतर ही छद्मस्थभाव में कहीं मृत्यु न प्राप्त कर जायं। उस समय सालकोष्ठक के पास मालुयाकच्छ में भगवान् का एक शिष्य 'सीहा' मुनि, जो भद्र प्रकृति का था, बेले की तपस्या के साथ ध्यान कर रहा था। ध्यानावस्था में ही उसके मन में यह विचार हुआ कि मेरे धर्माचार्य को विपुल रोग उत्पन्न हुआ है और वे इसी दशा में कहीं काल कर जायेंगे तो लोग कहेंगे कि ये छद्मस्थ अवस्था में ही काल कर गये और इस तरह हम सब की हँसी होगी। इस विचार से सीहा अनगार फूट-फूट कर रोने लगा।

घट-घट के अन्तर्यामी त्रिकालदर्शी श्रमण भगवान् महावीर ने तत्काल निर्ग्रन्थों को बुलाकर कहा–आर्यो! मेरा अन्तेवासी सीहा अनगार, जो प्रकृति का भद्र है, मालुयाकच्छ में मेरी बाधा-पीड़ा के विचार से तेज स्वर में रुदन कर रहा है, अतः जाकर उसे यहां बुला लाओ। प्रभु के संदेश से श्रमण निर्ग्रन्थ मालुयाकच्छ गए और सीहा अनगार को भगवान् द्वारा बुलाये जाने

की सूचना दी। सीहा मुनि भी निर्ग्रन्थों के साथ भगवान् महावीर के पास आये और वन्दना नमस्कार कर उपासना करने लगे। सीहा मुनि को सम्बोधित कर प्रभु ने कहा— सीहा! ध्यानान्तरिका में तेरे मन में मेरे अनिष्ट की कल्पना हुई और तुम रोने लगे, क्या यह ठीक है? सीहा द्वारा इस तथ्य को स्वीकृत किये जाने पर प्रभु ने कहा— सीहा! गोशालक की तेजोलेश्या से पीड़ित होकर मैं छह महीने के भीतर मृत्यु प्राप्त करूंगा, ऐसी बात नहीं है। मैं सोलह वर्ष तक जिनचर्या से सुहस्ती की तरह और विचरूंगा। अतः हे आर्य! तुम मेढ़िया ग्राम में रेवती गाथापत्नी के घर जाओ और उसके द्वारा मेरे लिये तैयार किया हुआ आहार न लेकर अन्य जो बासी बिजोरा पाक है, वह ले आओ। व्याधि मिटाने के लिये उसका प्रयोजन है।

भगवान् की आज्ञा पाकर सीहा अनगार बहुत प्रसन्न हुए और प्रभु को वन्दन कर अचपल एवं असंभ्रान्त भाव से गौतम स्वामी की तरह शाल कोष्ठक चैत्य से निकल कर, मेढ़ियाग्राम के मध्य में होते हुए, रेवती के घर पहुँचे। रेवती ने सीहा अनगार को विनयपूर्वक वन्दना की और आने का कारण पूछा। सीहा मुनि ने कहा— रेवती! तुम्हारे यहाँ दो औषधियाँ हैं, उनमें से जो तुमने श्रमण भगवान् महावीर के लिये तैयार की हैं, मुझे उससे प्रयोजन नहीं, किन्तु अन्य जो बिजोरापाक है, उसकी आवश्यकता है।

### भगवान् की रोग-मुक्ति

सीहा मुनि की बात सुनकर रेवती आश्चर्य-चकित हुई और बोली मुनि! ऐसा कौन सा ज्ञानी या तपस्वी है, जो मेरे इस गुप्त रहस्य को जानता है? सीहा अनगार ने कहा—श्रमण भगवान् महावीर, जो चराचर के ज्ञाता व द्रष्टा हैं, उनसे मैंने यह जाना है, फिर तो रेवती श्रद्धावनत एवं भाव-विभोर हो भोजनशाला में गई और बिजोरा-पाक लेकर उसने मुनि के पात्र में वह सब पाक बहरा दिया। रेवती के यहां से प्राप्त बिजोरापाक रूप आहार के सेवन से भगवान् का शरीर पीड़ारहित हुआ और धीरे-धीरे वह पहले की तरह तेजस्वी होकर चमकने लगा। भगवान् के रोग-निवृत्त होने से श्रमण-

श्रमणी और श्रावक-श्राविका वर्ग ही नहीं अपितु स्वर्ग के देवों तक को हर्ष हुआ। सुरासुर और मानव लोक में सर्वत्र प्रसन्नता की लहर सी दौड़ गई।[१] रेवती ने भी इस अत्यन्त विशिष्ट भावपूर्वक दिये गये उत्तम दान से देवगति का आयुबन्ध एवं तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन कर जीवन सफल किया।

सीहा अणगार को भगवान् महावीर ने रेवती के घर औषधि लाने के लिये भेजा, उसका उल्लेख भगवती सूत्र के शतक १५, उद्देशा १ में इस प्रकार किया गया है :

.... अहं णं अण्णाइं सोलसवासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तं गच्छह णं तुमं सीहा। मिंढ़ियागामं णयरं रेवतीए गाहावयणीए गिहे, तत्थ णं रेवतीए गाहावईए मम अट्ठाए दुवे कवोयसरीरा उवक्खडिया तेहिं णो अट्ठो अत्थि। से अण्णे परिवासीमज्जारकड़ए कुक्कुडमंसए तमाहराहि, तेणं अट्ठो। तएणं....

इस पाठ को लेकर ई० सन् १८८४ से अर्थात् लगभग ८७ वर्ष से पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों में अनेक प्रकार के तर्क-वितर्क चल रहे हैं। जैन परम्परा से अनभिज्ञ कुछ विद्वानों की धारणा कुछ और ही तरह की रही है कि इस पाठ में भगवान् महावीर के मांसभक्षण का संकेत मिलता है। पर वास्तव में ऐसी बात नहीं है। पाठ में आये हुए शब्दों का सही अर्थ समझने के लिये हमें प्रसंग और तत्कालीन परिस्थिति में होने वाले शब्द-प्रयोगों को लक्ष्य में लेकर ही अर्थ करना होगा। उसके लिये सबसे पहले इस बात को ध्यान में रखना होगा कि रेवती श्रमण भगवान् महावीर की परम भक्त श्रमणोपासिका एवं सती जयंती तथा सुश्राविका मृगावती की प्रिय सखी थी। अतः मत्स्यमांसादि अभक्ष्य पदार्थों से उसका कोई सम्बन्ध हो ही नहीं सकता। रेवती ने परम उत्कृष्ट भावना से इस औषधि का दान देकर देवायु और महामहिम तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन किया था।

भगवती सूत्र के पाठ में आये हुए खास विचारणीय शब्द कवोयसरीर, मज्जारकडए कुक्कुडमंसए शब्द हैं। जिनके लिये भगवती सूत्र के टीकाकार आचार्य अभयदेव सूरि और दानशेखर सूरि ने क्रमशः कुष्मांड फल और

मार्जार नामक वायु की निवृत्ति के लिए बिजोरा (बीजपूरक कटाह) अर्थ किया है।

विक्रम संवत् ११२० में अभयदेव ने स्थानांग सूत्र की टीका बनाई। उस टीका में उन्होंने अन्य मत का उल्लेख तक नहीं किया है और उन्होंने स्पष्टतः निश्चित रूप से कवोयसरीर का अर्थ कुष्मांडपाक और मज्जारकडएए कुक्कुड मंसए का अर्थ मार्जार नामक वायु के निवृत्त्यार्थ बीजपूरक कटाह अर्थात् बिजौरापाक किया है। अभयदेव द्वारा की गई स्थानांग सूत्र की व्याख्या में किंचित्मात्र ध्वनि तक भी प्रतिध्वनित नहीं होती कि इन शब्दों का अर्थ मांसपरक भी हो सकता है। जैसा कि स्थानांग की टीका के निम्नलिखित अंश से स्पष्ट है :

भगवांश्च स्थविरैस्तमाकार्योक्तवान्— हे सिंह ! यत् त्वया व्यकल्पि न तद्भावि, यत इतोऽहं देशोनानि षोडश वर्षाणि केवलिपर्यायं पूरयिष्यामि, ततो गच्छ त्वं नगरमध्ये, तत्र रेवत्यभिधानया गृहपतिपत्न्या मदर्थं द्वे कुष्मांडफल शरीरे उपस्कृते, न च ताभ्यां प्रयोजनम् तथान्यदस्ति तद्गृहे परिवासितं मार्जाराभिधानस्य वायोर्निवृत्तिकारकं कुक्कुटमांसकं बीजपूरककटाहमित्यर्थः, तदाहर, तेन नः प्रयोजनमित्येवमुक्तोऽसौ तथैव कृतवान्,.....

स्थांनांग सूत्र की टीका का निर्माण करने के ८ वर्ष पश्चात् अर्थात् वि० सं० ११२८ में अभयदेव सूरि ने भगवती सूत्र की टीका का निर्माण किया। उसमें उन्होंने भगवती सूत्र के पूर्वोक्त मूल पाठ की टीका करते हुए लिखा है :

दुवेकवोया इत्यादे : श्रूयमाणमेवार्थं केचिन्मन्यन्ते, अन्ये त्वाहु : –कपोतक : पक्षिविशेषस्तद्वद् ये फले वर्णसाधर्म्यात्ते कपोते, कुष्मांडे ह्रस्वे कपोते कपोतके ते च ते शरीरे वनस्पतिजीवदेहत्वात् कपोतकशरीरे अथवा कपोतकशरीरे इव धूसरवर्णसाधर्म्यादेव कपोतक शरीरे-कुष्मांड फले....परिआसिए त्ति परिवासितं ह्यस्तनमित्यर्थः, मज्जारकडए इत्यादेरपि केचित् श्रूयमाणमेवार्थ मन्यन्ते, अन्ये त्वाहुः—मार्जारो वायुविशेषस्तदुपशमनाय कृत-संस्कृतं मार्जारकृतम्, अपरे त्वाहु :- मर्जारो विरालिकाभिधानो वनस्पतिविशेषस्तेन

कृतं भावितं यत्तत्तथा किं तत् इति? आह कुर्कुटक मांसकं बीजपूरक कटाहम्....।

(भगवती सूत्र अभयदेवकृत टीका, शतक १५,उ० १)

इसमें अभयदेव ने अन्य मत का उल्लेख किया है पर उनकी निजी निश्चित मान्यता इन शब्दों के लिये मांसपरक अर्थ वाली किसी भी दशा में नहीं कही जा सकती।

अर्थ का अनर्थ करने की कुचेष्टा रखने वाले लोगों को यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि सामान्य जैन साधु का जीवन भी अमज्झमंसासिणो विशेषण के अनुसार मद्यमांस का त्यागी होता है, तब महावीर के लिये मांस-भक्षण की कल्पना ही कैसे की जा सकती है? इसके साथ ही साथ इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को भी सदा ध्यान में रखना होगा कि भगवान् महावीर ने अपनी देशना में नरक गति के कारणों का प्रतिपादन करते हुए मांसाहार को स्पष्ट शब्दों में नरक गति का कारण बताया है।[२]

आचारांग सूत्र में तो श्रमण को यहां तक निर्देश दिया गया कि भिक्षार्थ जाते समय साधु को यदि यह ज्ञात हो जाय कि अमुक गृहस्थ के घर पर मद्य मांसमय भोजन मिलेगा तो उस घर में जाने का साधु को विचार तक नहीं करना चाहिए।[३]

भगवान् महावीर की पित्तज्वर की व्याधि को देखते हुए भी मांस अर्थ अनुकूल नहीं पड़ता किन्तु बिजौरे का गिरभाग जो मांस पद से उपलक्षित है, वही हितकर माना गया है। जैसा कि सुश्रुत से भी प्रमाणित होता है—

लघ्वम्लं दीपनं हृद्यं मातुलुंगमुदाहृदतम्।
त्वक् तिक्ता दुर्जरा तस्य वातकृतमिकफापहा।।
स्वादु शीतं गुरु स्निग्धं मांसं मारुतपित्तजित्।
मेध्यं शूलानिलछर्दिकफारोचक नाशनम्।।

निघण्टु में भी बिजौरा के गुण इस प्रकार बताये गये हैं :-

रक्तपित्तहरं कण्ठजिह्वाहृदयशोधनम्।

श्वासकासारुचिहरं हृद्यं तृष्णाहरं स्मृतम्।।१३२
बीजपुरो परः प्रोक्तो मधुरो मधुकर्कटी।
मधुकर्कटिका स्वादी रोचनी शीतला गुरुः।।१३३
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ।।१३४

(भावप्रकाश निघण्टु)

वैजयन्ती कोष में बीजपूरक को मधुकुक्कुटी के नाम से उल्लिखित किया गया है। यथा :-

देविकायां महाशल्का दूष्यांगी मधुकुक्कुटी।
अथात्ममूला मातुलुंगी पूति पुष्पी वृकाम्लिका।।

(वैजयन्ती कोष, भूमिकाण्ड, वनाध्याय, श्लोक ३३-३४)

पित्तज्वर के उपशमन में बीजपूरक ही हितावह होता है, इसलिए यहाँ पर कुक्कुडमंस शब्द से मधुकुक्कुटी अर्थात् बिजौरे का गिर ही समझना चाहिये।

जिस संस्कृति में जीवन निर्वाह के लिए अत्यावश्यक फल, मूल एवं सचित्त जल का भी भक्ष्याभक्ष्य रूप से विचार किया गया है, वहां पर स्वयं उस संस्कृति के प्रणेता द्वारा मांस जैसे महारम्भी पदार्थ का ग्रहण, कभी मानने योग्य नहीं हो सकता।

जिन भगवान् महावीर ने कौशाम्बी पधारते समय प्राणान्त संकट की स्थिति में भी क्षुधा एवं तृषा से पीड़ित मुनिवर्ग को वन-प्रदेश में सहज अचित्त जल को सम्मुख देखकर भी पीने की अनुमति नहीं दी, वे परम दयालु मुनि स्वयं की देह-रक्षा के लिए मांस जैसे अग्राह्य पदार्थ का उपयोग करें, यह कभी बुद्धिगम्य नहीं हो सकता। अतः बुद्धिमान् पाठकों को शब्दों के बाहरी कलेवर की ओर दृष्टि न रखकर उनके प्रसंगानुकूल सही अर्थ, बिजोरापाक को ही प्रमाणभूत मानना चाहिए।

साधु को किस प्रकार का आहार त्याज्य है, इस सम्बन्ध में आचारांग सूत्र के उदाहरणपरक मूल पाठ 'बहु अट्ठिएण मंसेण वा मंसेणा वा बहुकण्टएण' को

लेकर सर्वप्रथम डॉक्टर हर्मन जैकोबी को भ्रम उत्पन्न हुआ उन्होंने आचारांग के अंग्रेजी अनुवाद में यह मत प्रकट करने का प्रयास किया कि इन शब्दों का अर्थ मांस ही प्रतिध्वनित होता है। जैन समाज द्वारा हर्मन जैकोबी की इस मान्यता का डटकर उग्र विरोधी किया गया और अनेक शास्त्रीय प्रमाण उनके समक्ष रखे गये। उन प्रमाणों से हर्मन जैकोबी की शंका दूर हुई और उन्होंने अपने दिनांक २४-२-२८ के पत्र में अपनी भूल स्वीकार करते हुए आचारांग सूत्र के उक्त पाठ को उदाहरणपरक माना। श्री हीरालाल रसिकलाल कापड़िया ने हिस्ट्री आफ कैनोनिकल लिटरेचर आव जैनाज में डॉक्टर जैकोबी के उक्त पत्र का उल्लेख किया है जो इस प्रकार है :

> There he has said that बहु अट्ठिएण मंसेण वा मच्छेण वा बहुकण्टएण has been used in the metaphorical sense as can be seen from the illustration of नान्तरीयकत्व given by Patanjali in discussing a Vartika at Panini (III, 3, 9) and from Vachaspati's com. oh Nyayasutra (iv, 1, 54). He has concluded: "This meaning of the passage is therefore, that a monk should not accept in alms any substance of which only a part can be eaten and a greater part must be rejected,"
>
> जिस भक्ष्य पदार्थ का बहुत बड़ा भाग खाने के काम में न आने के कारण त्याग कर डालना पड़े उसके साथ नान्तरीयकत्व भाव धारण करने वाली वस्तु के रूप में उदाहरणपरक मत्स्य शब्द का प्रयोग किया गया है, क्योंकि मत्स्य के काँटों को बाहर ही डालना पड़ता है। डॉ. हरमन जैकोबी ने नान्तरीयकत्व भाव के रूप में उपर्युक्त पाठ को माना है।
>
> आचारांग सूत्र के उपर्युक्त पाठ का और अधिक स्पष्टीकरण करते हुए डॉक्टर स्टेन कोनो ने डॉक्टर वाल्थेर शूबिंग द्वारा जर्मन भाषा में

लिखी गई पुस्तक दाई लेह देर जैनाज की आलोचना में लिखा था- "I shall mention only one detail, because the common European view has here been largely resented by the Jainas. The mention of *Bahuasthiyamansa* and *Bahukantakamachha* meat or 'fish' with many bones in Acharanga has usually been interpreted so as to imply that it was in olden times, allowed to eat meat and fish, with many bones in Acharanga has usually been interpreted so as to imply that it was in olden times, allowed to eat meat and fish, and this interpretation is given on p. 137, in the Review of Philosophy and Religion, Vol, IV-2 Poona 1933, pp. 75. Prof. Kapadia has, however, published a letter from Prof. Jacoby on the 14th February, 1928 which in my opinion settles the matter. Fish of which the flesh may be eaten but scales and nones must be taken out was a school example of an object containing the substance which is wanted in intimate conexion with much that must be rejected. The words of the Acharanga are consequently technical terms and do not imply that 'meat' and 'fish' might be eaten."

ओस्ली के विद्वान, डॉक्टर स्टेन कोनो ने जैनाचार्य श्री विजयेन्द्र सूरिजी को लिखे गये पत्र में डॉ. हर्मन जैकोबी के स्पष्टीकरण की सराहना करते हुए यह मत व्यक्त किया है कि पूर्ण अहिंसावादी और आस्तिक जैनों में कभी मांसाहार का प्रचलन रहा हो, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। वह पत्र इस प्रकार है :—

"Prof. Jacoby has done a great service to scholars in

clearing up the much discussed question about meat eating among Jainas. On the face of which, it has always seemed incredible to me that it had at any time, been allowed in a religion where Ahimsa and also Ascetism play such a prominent role....." Prof. Jacoby's short remarks on the other hand make the whole matter clear. My reason for mentioning it was that I wanted to bring his explanation to the knowledge of so many scholars as possible. But there will still, no doubt, be people who stick to the old theory. It is always difficult, to do away with false ditthi but in the end truth always prevails."

इस सब प्रमाणों से स्पष्टतः सिद्ध होता है कि अहिंसा को सर्वोपरि स्थान देने वाले जैन धर्म में मांस-भक्षण को सर्वथा त्याज्य और नर्क में पतन का कारण माना गया है। इस पर भी जो लोग कुतर्कों से यह सिद्ध करना चाहते हैं कि जैन आगमों में मांस-भक्षण का उल्लेख है, उनके लिए हम इस नीति पद को दोहराना पर्याप्त समझते हैं :-

ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापितं नरं न रंजयति।

# मृत्यु

डॉ. सागरमल जैन

मृत्यु
शरीर के कारागृह से
मुक्ति का पर्व है।
यह तो
स्व का संकुचित घेरा तोड़
विराट में समाने का
उत्सव है।
बीज मिटकर ही
वृक्ष बन पाता है
स्वयं को मिटाकर ही
व्यक्ति—
अनन्त को जीवन दे पाता है।
मित्रो—
मौत से घबराने की
क्या बात हैं ?
यह तो
अनन्त के साथ
शादी की बारात है।
मिटकर बनना
और बनकर मिटना
यही तो जीवन
यात्रा का अनोखा है खेल
यह यात्रा तो पहुँचती वहाँ है
जहाँ स्व नहीं सर्व है।
आना जाना तो लगा ही रहता है—
इसमें डरने की क्या बात हैं ?

नये नये रूपों को धरने का
यही तो एक अन्दाज है।
यदि पहनने की चाह है
नये कपड़े,
बदलना ही होंगे पुराने
यदि पाना हैं नव जीवन
मरण से मित्रता करनी ही होगी।
होना ही होगा आलिंगनबद्ध मृत्यु से
मृत्यु यात्रा की समाप्ति नहीं है।
यह तो नई यात्रा का प्रस्थान-पर्व है।
समझ नहीं आता कि
लोग मृत्यु से कतराते क्यों हैं?
अनन्त यात्रा पर निकलने से
घबराते क्यों हैं?
मृत्यु एक शाश्वत सत्य है
इससे मुखातिब होने में
क्या घबराना।
सत्य को जानकर
उससे जी चुराना क्यों ?
तरह तरह से
बहाना बनाना क्यों ?
जीवन-धारा को
अनन्त महासागर में मिलना ही है।
फिर, किनारों के छूटने का भय कैसा?
किनारे छूटने पर ही तो मिलन संभव है—
किनारे कभी मिलते नहीं
बस महासागर बनने में छूट जाते है।
मृत्यु समग्र विनाश नहीं
यह तो रूपान्तरण है
यह जीवन की समाप्ति नहीं
यह तो नव जीवन की नव-चेतना का उत्सव है।

# वैर का विपाक

उनके इस उपदेश से जालिनी मानों द्रवित हो गई हो और अपने आत्मा के उद्धार के लिए व्रत लेना चाह रही हो ऐसा उसने ढोंग किया। शिखी मुनि भी माता को प्रतिबोध करने धर्म के मार्ग पर चढ़ाने के अभिलाषी तो थे ही। अतः माता को उन्होंने विधिपूर्वक धर्म संस्कार दिए। शिखी मुनि मन में चाहे जो मानते हों, परन्तु जालिनी के फंदे की रस्सियां खिंचती ही जा रही थीं। ..... अब फंस ही जाना चाहिए, ऐसे तीव्र द्वेष से प्रेरित हुई जालिनी को पूरा पूरा विश्वास हो गया। साधू जीवन की विधि तथा आचार नहीं जाननेवाली जालिनी ने अंत में यह कहा कि आज तो अब मेरे हाथ का आहार करते जाओ तो मैं कृतकत्य हो जाऊं।

शिखी मुनि के कहा : श्रमण के लिए यह मार्ग बन्द है।

जालिनी निराश हो गई। परन्तु फिर एक बार वह प्रयत्न करेगी ऐसा निश्चय कर उसने उस दिन तो मुनिजी को दो हाथ जोड़ विदा करा दिया।

इस प्रकार कितने ही दिन बीत गए। शिखी मुनि के विहार के दिन भी एकदम निकट आ पहुँचा। जालिनी की घबराहट भी बढ़ गई। जाल में फंसा पक्षी भी उड़ जाए और शिखी की संसारी माता की अपकीर्ति गूँजती रहे यह देखते रहने को जालिनी अनिच्छुक थी।

चौदस का दिन था। जालिनी को लगा कि कल तो मास कल्प पूरा हो जाएगा। शिखी विहार कर मेरे फंदे में से छिटक जाएंगे।

जालिनी को अपने अंतर में गहरी सुनसुनाहट हो रही थी और रक्त बड़े वेग से प्रवाहित हो रहा था। अपनी ऐसी स्थिति में ही उसने निश्चय किया कि चाहे जैसे भी हो उसे आज ही अपना काम पटा लेना होगा। ऐसे पापकर्म में किसी की सहायता मिले ऐसी तो आशा उसे बिलकुल ही नहीं थी। जो कुछ करना था उसे स्वयं और अकेले ही करना होगा।

चौदस की एक और भी अनुकूलता उसे थी। श्रमण बहुतांश उस दिन आहारादि का त्यागकर ज्ञान-ध्यान अथवा क्रियाकांड में ही तल्लीन रहते हैं। शिखी के अतिरिक्त अन्य सब साधु इसके प्रभाव से बचे रह जाएंगे और जिसके अंतर में तीर मारना है उसी को वह लगेगा और वही उसका शिकार बन जाएगा।

ऐसा विचार कर जालिनी ने तुरंत ही लड्डू बनाए और उनमें पता न लगे ऐसा कातिल विष उसने मिला दिया। अन्य मुनियों के लिए उसने लड्डू बनाकर बनाकर पृथक पात्र में रख दिये।

आहार सामग्री लेकर जालिनी स्वयं ही मेघवन उद्यान में गई। शिखी ने माता को आहारादि लेकर आया हुआ देखकर कहा माता, श्रमणमुनि ऐसा आहार नहीं ले सकते है। मुनि अपने लिए तैयार किया आहार नहीं स्वीकार करते हैं। ऐसा भोजन लेना हमारे आचार के विरुद्ध है।

शिखी यह आहार नहीं ग्रहण करेगें तो क्या इतना सब किया परिश्रम निरर्थक ही जाएगा? जालिनी की सारी देह भय और चिंता से पसीने पसीने हो गई। तब वह इस प्रकार कहने लगीः मैं अबूझ श्रमण के आचार क्या समझूं? मेरी शक्ति की ओर तो एक बार कृपया देखिए। दूसरी बार मैं ऐसी भूल नहीं करूंगी।

शिखी मुनि को थोड़ी देर के लिए अपनी निर्बलता चुभी। थोड़ी सी भी भूल हो जाए तो मनुष्य एकदम नीचे भूमितल पर ही आ गिरता है, यह सूत्र उन्हें स्मरण हुआ। फिर भी स्नेह दुर्बलता की शिकार शिखी माता को संतोष देने को तैयार हो ही गये। प्रमाद तो अवश्य ही हो रहा है, परन्तु उसका प्रायश्चित क्या नहीं किया जा सकता है? माता की धर्मश्रद्धा की अवगणना करने का उनको साहस नहीं हुआ।

शिखी मुनि को जालिनी ने विषमिश्रित मोदक बहरा ही दिया।

जालिनी अपने घर लौट गई और इधर विष का प्रभाव शिखी की देह में दिखाई देने लगा। मुनिजी की आंखों के आगे एकदम अंधेरा छा रहा था और वे भूमि पर लुढ़क गए। साधु घबराए हुए दौड़कर उनके पास पहुँचे शिखी

मुनि के चारों ओर बैठ गए हैं। अन्यथा जिस देह के नख में भी रोग न हो वह इस प्रकार ढीला होकर लुढ़क नहीं पड़ सकता है।

कुछ देर के पश्चात् जब शिखी ने अंतिर बार के लिए नेत्र खोले तो उनके होठों में से मात्र इतने ही शब्द निकले : मैं शान्त भाव से इस देह का त्याग करता हूँ, मेरी चिंता कोई नहीं करें। मैं सबको खमाता हूँ। इतनी असह्य वेदना में भी इतनी शांति, ऐसी क्षमा और ऐसा समभाव देखकर पास में बैठे सब स्वजनों को आश्चर्य हो रहा था।

सूरिजी को शिखी मुनि के देहत्याग की जब सूचना मिली तो उन्हें अत्यन्त खेद हुआ। ऐसा लगता है कि माता उनके पूर्व जन्म की शत्रु ही होनी चाहिए। इसमें जरा भी संदेह को अब स्थान नहीं है। यदि शिखी मुनि को पहले से ही अटका लिया होता तो? परन्तु इस प्रकार भविष्य को कैसे मिथ्या किया जा सकता था?

बस यहीं आकर संसार के घटनाक्रम का चक्र नियमित गति से चलाते रहने वाली एक अगम्य सत्ता का स्पष्ट दर्शन हो जाता है। हरिणी जैसा असहाय, रंक, नरम प्राणी दूसरा क्या कोई है? परन्तु प्रबल शिकारी अथवा सिंह जैसे घातकी प्राणी का पंजा अपने बच्चे के ऊपर पड़ता देखते ही इस हरिण शावक की माता सिंह अथवा शिकारी के विरुद्ध खड़ी हो जाती है। और मृत्यु को तुच्छ मानती शावक को बचाने को माता सारी शक्तियों को दाँव पर लगा देती है। भक्तामर काव्य में कहा है :

प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेन्द्र।

परिपालनार्थ ?

परन्तु जब मानवदेहधारिणी माता अपने अहोनिश आनंद का और धर्म की पताका फहरानेवाले पुत्र के भोजन में निष्कारण विष मिलाने को तैयार हो तो पूर्वभव का कोई उग्र, तीक्ष्ण धार जैसा वैर ही कारणभूत होना चाहिए ऐसी प्रतीति हो जाती है।

यह सब देखते हुए लगता है कि मनुष्य रागद्वेष, वैर विपाक के जो तूफान आते रहते है उनके बल से बारंबार संसार में धकेला जा रहा है। घड़ी भर

लड़-झगड़ और मिलकर फिर अदृश्य हो जाता हो ऐसा लगता है। ऐसा लगता है कि मानो एक अनंत नाटक ही खेला जा रहा है। इसके ये ही पात्र भिन्न-भिन्न वेश पहनकर कभी माता पिता के रूप में तो कभी संतान के रूप में अपना कर्म खेलकर चले जाते देखे जाते हैं।

इस महान अभिनय में अग्निशर्मा का जीव जालिनी माता का स्वांग धरकर आया था और शिखी गुणसेन का जीव था। संतान के आहार में विष मिलानेवाली जालिनी स्वयं ही वैर के विष से प्रज्वलित हो रही थी। जिसके रक्त के अणु अणु में वैर का हलाहल भरा हो वह माता यदि पुत्र की हत्यारी बने तो इसमें आश्चर्य ही क्या?

वैर-विद्वेष है इसीलिए तो उपशम की आवश्यकता और महत्ता है। थोड़ा उपशम थोड़ा क्षमाभाव वैर के काष्ठ को जलाकर भस्म करने की शक्ति रखता है। इसीलिए कर्म के आघात-प्रत्याघात के परिगामियों को उपशम की इतनी महत्ता भाई है। शिखी मुनि के देह की आहुति में से भी प्रशम का धूपं ही उड़ रहा है।

।। चतुर्थ खंड।।

वैश्रमण सार्थवाह के यहाँ धनदेव कुमार का जन्म हुआ तब बैश्रमण ने यही माना था कि अन्त में यज्ञ की साधना फली तो सही। वैश्रमण और श्रीदेवी दोनों की अनेक दिनों की यज्ञपूजा का ही यह फल होना चाहिए कि धनदेव यज्ञ ने कृपाकर यह पुत्र दिया और इसी लिए उसने उस पुत्र का नाम भी यक्ष के नाम पर ही धन रखा। यज्ञदेव की कृपा के साथ-साथ पति पत्नी दोनों ही अपने पूर्वसंचित किंचित् पुण्यबल का भी प्रभाव मानते थे। धनदेव ज्यों ही कुछ बड़ा हुआ और दूसरे बालकों की साथ खेलने-कूदने और चलने फिरने लगा तो माँ-बाप को वह कुछ विचित्र प्रकृति का लगा। उन्हें ऐसा लगा कि धनदेव अनेक बार अपना कोई नया, मूल्यवान वस्त्र, आभूषण अथवा खिलौना खोकर ही घर लौटता है अथवा कोई उससे ये छीन लेता हैं। परन्तु यह कभी इसका प्रतिकार नहीं करता है इससे ऐसा लगता है कि यह कायर अथवा डरपोक ही होना चाहिये। खोज-पूछ करने पर जब उन्हें यह पता

चला कि घनदेव को सुंदर वस्त्र, आभूषण आदि का मोंह नहीं है दूसरों को दे देने में भी उसे तनिक भी संकोच नहीं होता है तब तो उसके माता पिता को यह विश्वास हो ही गया कि यज्ञदेव की कृपा से पूर्व का कोई महापुण्यवासी जीव ही उनके घर में अवतरित हुआ है। बस उसी दिन से घनदेव कुमार अपने माता पिता का मात्र प्रीतिपात्र ही नहीं अपितु आदर और सम्मान का भी अधिकारी हो गया।

जब धनदेव और भी कुछ बड़ा समझदार हुआ तो फिर इसके स्वभाव में एक नया पलटा आया। पहले की भांति अब वह चाहे जिस वस्तु को निष्कारण ही किसी को दे नहीं देता है अपितु विवश होता तभी किसी को देता है। गरीबों अथवा दीन-दुखियों को अन्न-वस्त्र देने में उसको आनन्द आता है, परन्तु मानो कि इसका कोई हाथ पकड़ लेता हो अथवा अंदर ही अंदर से कोई निषेध करता हो ऐसा उसे लगने लगा है। माता-पिता अथवा और किसी आप्तजन ने धनदेव को इसके लिए कभी भी मना नहीं किया था यही नहीं अपितु वे तो धनदेव की समर्पणता देख देख मन में प्रसन्न ही होते थे। उनका एकाएक और पूर्वजन्म के पुण्य का रूप धरकर, उनके घर में अवतरण होनेवाला पुत्र ही जो अन्नदान अथवा वस्त्रदान में आनन्द मानता हो तो उसे सुख से यह आनन्द लूटने दिया जाए, ऐसी ही उनकी विचारशैली थी। फिर भी धनदेव अभी अभी लोभी अथवा कंजूस जैसा कैसे बन गया? उसके मुख पर जो ताजगी और प्रफुल्लता सतत लहराती थी वह कहां और क्यों लोप हो गई? यह धनदेव के निकट के साथी अथवा अग्रज भी समझ नहीं पा रहे थे।

एक दिन धनदेव राजमार्ग पर अकेला ही खड़ा था। सामने के विशाल और उत्तुंग भवन के द्वार के पास एक झरोखे में बैठे एक श्रीमंत सज्जन गरीबों को, कंगालों को यशवतों और वृद्धों को उनकी आवश्यकता के अनुसार वस्त्र तथा धान्यादि बांटा करते थे। भूख की पीड़ा भोगते ये कंगाल जब थोड़ा सा अन्न प्राप्त कर लौटते थे तो उनके मुखों पर उभरता आनन्द धनदेव खड़ा खड़ा वैसे ही देखा करता था कि जैसे वह प्रकृति का कोई गूढ़ और मनोरम दृश्य ही देख रहा हो। काजल के समान काले मेघों के बीच विद्युत

की रेखा खिंच जाए वैसे ही इन कंगालों के उदास मुखों पर कृतार्थता और कृतज्ञता की तेज छटा नृत्य करती धनदेव को दिखती थी। भूखे और नंगे, ठंड से ठिठुरते अस्थिपंजर जैसे बालकों को खाते तथा देह को ढकते देखकर कुम्हालाय पुष्पझाड़ जैसे फिर से नवजीवन प्राप्त करता हो ऐसा सोचते सोचते उनके प्रत्येक हावभाव का निरीक्षण धनदेव करता था। ऐसे समय वह किसी गहरी चिंता में मग्न हो जाता था।

एकदिन मार्ग पर खड़े और विचारमग्न हुए धनदेव को उसके मित्र सोमदेव ने जागृत किया और उससे पूछाः मैं तो समझा था कि आज कार्तिकी पूर्णिमा है। अतः तुम किसी उद्यान में अथवा रंगमंडप में गए होगे। इन कंगालों की कतार में तुम्हें क्या देखने जैसा मिला?

धनदेव ने सोमदेव की जोर अर्थपूर्ण दृष्टि की। उसकी जीभ भी किंचित् हिली। परन्तु उसे लगा कि दिल का दर्द पुरोहित का पुत्र ठीक ठीक समझ नहीं सकता है। फिर भी धनदेव ने, तंद्रा में से जागता ही हो वैसे संक्षेप में उससे कहाः मुझे इन कंगालों की तृप्ति और कृतज्ञता के सामने दुनिया के सब आनन्द उल्लास फीके और कृत्रिम लगते हैं। अतः जब भी प्रसंग या समय मिलता है तब मैं यह देखा करता हूँ। आँख और मन की यह वासना मानों संतुष्ट ही नहीं होती है। इतना मात्र कहकर धनदेव सहज ही हंस पड़।

परन्तु तुम भी, यदि निश्चय कर लो तो, अपने यहां ही बैठे-बैठे गरीबों को दान दे सकते हो। जीवन पर्यन्त खरचते रहो तो भी न कम हो इतना धन तुम्हारे पिता ने संग्रह किया हुआ है। क्या तुम्हें कोई ना कहता है? सोमदेव ने पूछा।

धनदेव ने एक गहरा निश्वास लिया। यह निश्वास ही मानों उसका एक मात्र उत्तर हो ऐसे धनदेव चुप ही रहा। अंतर के आनन्द अथवा वेदना की एक एक बात दूसरों को समझाने में धनदेव को अनेक बार संकोच होता था। निकट के स्नेही अथवा मित्र भी धन देव की उलझन बराबर समझ नहीं पा रहे थे। ऐसे कितने ही अनुभवों के अंत में धनदेव ने प्रत्येक बात का स्पष्टीकरण करना ही छोड़ दिया था। विवशता से कुछ कहना ही पड़े तो उतना मात्र ही कहना इसी नियम का वह, जहां तक होता, अनुसरण करता था।

सोमदेव के प्रश्नों का उत्तर धनदेव सहज ही दे सकता था। परन्तु बात का अधिक प्रचार हो जाए और माता-पिता को कदाचित् कष्ट पहुँचे इसी विचार से मात्र इतना ही उसने कहा पिता की कमाई पर मेरा क्या अधिकार? पिता की सम्पत्ति मैं दान में दूँ इसमें मेरा क्या पुरुषार्थ?

सोमदेव धनदेव को समझा या नहीं यह तो कौन कह सकता है? परन्तु धनदेव अपना पुरुषार्थ आप स्फुटित करना चाहता है और अपने ही पसीने से पैदा की सम्पत्ति का ही दान करना चाहता है यह स्पष्ट हो गया। सोमदेव इस उत्तर में धनदेव का मात्र भोलापन ही देख सका और कुछ भी नहीं।

वैश्रमण सार्थवाह ने परदेश यात्राएं कर धन तो पुश्कल एकत्र किया था और उसका वारसा इस धनदेव को ही मिलनेवाला था। धनदेव स्वयम् यह समझता था। परन्तु उसने योग्य अवस्था प्राप्त होने पर निर्णय किया था कि पिता की भांति वह स्वयम् साहस नहीं करे, विघ्नों और संकटों को सामना धन संचय नहीं करे तो वह स्वच्छंदता से व्यय भी नहीं कर सकता है। पिता के धन से दानी बनना धनदेव को सस्ती कीर्ति कमाने जैसा लगता था। यद्यपि आसपास धनवान कुटुम्ब की संतानों को विलास तथा विनोद के रंग में देखता था, परन्तु उसके साथ ही उन विलासियों की उसे कंगालियत भी दीख रही थी। दान अथवा त्याग उसका ही किया जा सकता है कि जिस पर अपना नैतिक अधिकार हो। पिता की सम्पत्ति को अपना मानने से उसकी अंतरात्मा साफ इन्कार करती थी। और अंतरात्मा की आवाज का सब कोई के सामने स्पष्ट खुलासा करते भी उसे संकोच होता था।

सोमदेव और धनदेव उस दिन तो साथ ही घर आए। परन्तु धीरे-धीरे धनदेव की कहीं बात वैश्रवण सार्थवाह के कानों तक पहुंच ही गई। उसे पुत्र की उदासीनता का कारण अब समझ में आ गया। सार्थवाह का पुत्र सार्थवाह ही हो सकता है। व्यापार-वाणिज्य के लिए विशाल प्रदेशों की यात्रा की जाए इसमें कुछ भी असंगत नहीं है। वारसा में मिली सम्पत्ति के ऊपर संतान आलसी बन मौज मस्ती उड़ाए उसकी अपेक्षा स्वाश्रयी और पुरुषार्थी बने

तो वह सही है। वैश्रमण स्वयम् धनदेव को उसके साहस में अनुमति और आशीर्वाद देने को तैयार था।

उस युग में प्रवास आज का जैसा सुगम अथवा सुसाध्य नहीं था। सार्थवाहों के संघ उस युग में महान् आशीर्वादरूप बनते थे। वे यद्यपि व्यापार विस्तार के निमित्त देश के दूरस्थ विभागों से पर्यटन करते रहते और वस्तुओं का विनिमय करते तो भी प्रवासियों, यात्रियों, सन्यासियों और परिव्राजकों के अच्छे आश्रयभूत वे बनते थे। सार्थवाह अपने संघ के लोगों को यथाशक्ति सहायता भी करते थे। एक विशाल कुटुम्ब प्रवास पर निकला हो ऐसी इन संघों को देखकर कल्पना होती थी। सार्थवाहों के सब संघ निर्विघ्न अपने गंतव्य स्थान पहुँच ही जाते होंगे यह भी नहीं कहा जा सकता है। कई बार तो इन संघों को लुटेरे, ठग आदि के अकस्मात हमले को भी झेलना पड़ता था।

धनदेव का संघ निकालने का–सार्थवाह बनने का स्वप्न सफल हुआ। माता-पिता की पूर्ण सहमति से ताम्रलिप्त नगरी का, लगभग दो महीने मार्ग में लगे ऐसा, संघ निकला। सुशर्म नगर के अनेक व्यापारी भी इस संघ में सम्मिलित हुए। धनदेव के साथ उसकी पत्नी धनश्री और उसका नंदन नाम का आत्मीय मित्र भी था।

भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास में जैसे अनेक महापुरुषों के नाम में संजीवनी भर दी है वैसे कितनी ही नगरियों में रोमांचता भी भर दी है। ताम्रलिप्त किसी काल में वैभव और समृद्धि से छलकता हुआ बंदरगाह था। भारतीय समुद्र में फूलों के गुच्छों जैसे जो असंख्य द्वीप आए हुए हैं उनका प्रवेश का सिंह द्वार ताम्रलिप्त था। ताम्रलिप्त के साहसिक व्यापारी और नाविक दूर-दूर के द्वीपों से संबंध बांधते और विविध वस्तुओं के साथ धर्म और संस्कृति का भी विनिमय करते थे। जावा, सुमात्रा और मलाया के द्वीप ताम्रलिप्त के वासियों के लिए घर-आंगन जैसे ही बन गए थे।

धनदेव ने इस ताम्रलिप्त में आकर व्यापार करना प्रारम्भ किया और धनवानों में उसकी प्रतिष्ठा जमने भी लगी थी। धनदेव की दानशाला के अभंग द्वार सबके लिए खुले थे। कोई भी याचक अथवा द्रव्यार्थी वहाँ से

निराश होकर कदाचित् ही लौटता था। द्यूत में हारे हुए और अन्त में आपघात करने को तैयार जुआरी तक भी धनदेव को अपना तारणहार समझते थे। परन्तु धनदेव इतने से ही संतुष्ट नहीं था।

ताम्रलिप्त के सागरक्षीर पर धनदेव अनेक बार घूमने आया करता था। वेग से आते और तट के साथ थोड़ी सी देर के लिए संपर्क साधकर फिर अनंतता में मिल जाने वाली लहरों की अभिनयलीला वह अकेला बैठा देखता रहता था। अस्तंगत सूर्य की पानी में नृत्य करती किरणों और आकाश में व्याप्त होते रंगों को देखते-देखते वह गहरे ध्यान में डूब जाता था। सागर की एक लहर मानों इसके पूर्व जन्म की साथी हो, आवाज दे देकर उसे बुलाती हों, अपने वहां आने का आमंत्रण देकर हंसती-किलोलें करती पीछे लौट जाती हो ऐसा धनदेव को लगता था। अपनी स्थूल दृष्टि-मर्यादा से वह सागर को मापने का प्रयत्न करता था। साहसिक के पुरुषार्थ और धैर्य के सामने यह अनन्त जैसा लगता जलधि भी उसको इस समय छोटे जलाशय जैसा ही लगता था।

सागर के साथ धनदेव की यह मैत्री प्रारम्भ में तो आकस्मिक थी। पर बाद में सागर ही इसका परम सुहृद हो ऐसे दिन में और रात में भी कुछ अवकाश निकाल वह इसके साथ मौन गोष्ठी किया करता था। धनदेव के साथ ही साथ उसकी स्त्री तथा मित्र भी ताम्रलिप्त आए थे यह भी कहा जा चुका है। परन्तु इस धनदेव के और इसकी पत्नी एवम् मित्र के बीच में बहुत भारी अंतर पड़ गया था। इसके लिए धनदेव अपने को ही उत्तरदायी मानता है। कभी कभी इसका संसारासक्त मन विद्रोह कर देता तो धनदेव उसे समझाता हैः मूरख मनः धनश्री चाहे तेरी पत्नी बन गई, पर उसे तेरी सब आशाएं अथवा आकांक्षाओं का अनुसरण करना ही चाहिए यह तू क्यों मान लेता है? व्यक्तित्व में तो वह भी तेरे जितनी ही स्वतंत्र है। नंदक की साथ इसकी मैत्री हो गई हो, दोनों परस्पर सहानुभूति रखते हों, अतः वे अनाचार के मार्ग पर ही हैं, यह तू क्यों मान लेता है? और यदि कदाचित् वे दुश्चरित्र ही हो तो उन्हें दंड देने का तुझे क्या अधिकार है? हे मन! तू स्वयम् जिस दिन

निर्विकार-निष्पाप बन जाएगा उस दिन तेरी सब घमाचौकड़ियां आपोआप शांत हो जाएंगी। धनदेव व्यापारी और साहसिक होने पर भी जन्मविरागी था। वह खुद ही दान किया करता परन्तु उसकी भावना तो सर्वस्व समर्पण से आगे बढ़ त्याग से भी दूर जाने की थी। विश्व का कोई प्राणी तंगी भोगता हो, और उसको दानी या त्यागी के पास याचना करनी पड़े, उसको यह अच्छा नहीं लगता था। वह धन का दान करता है इसलिए वह संसार पर कोई बड़ा उपकार ही कर रहा है ऐसा मानने-मनवाने को वह साफ ही इन्कार करता था। दान करने के अतिरिक्त धन का दूसरा अच्छा उपयोग नहीं हो सकता है ऐसी गहरी श्रद्धा ही उसके त्याग में मुख्य कारणभूत थी। मुक्त हस्त दान करने के सिवा और सागरतीर पर बैठकर जल-कल्लोल का संगीत सुनने के सिवा मानो उसे दूसरा महत्व का कोई काम ही नहीं था।

थोड़े दिन ताम्रलिप्त में रहकर, अधिक साहसिक बनने को इसने समुद्रयात्रा पर जाने का निश्चय किया। ताम्रलिप्त से अनेक जहाज आकर यात्रा के लिए मिल जाते थे। धनदेव अपनी स्त्री धनश्री और मित्र नन्दन को लेकर शुभ मुहूर्त देख निकटस्थ द्वीप में जाने को जहाज में चढ़ा।

मार्ग में कारण, जो भी हो परन्तु, धनदेव का स्वास्थ्य टूट गया। प्रति दिन उसका रक्त सूखता जाता था और वह दुर्बल और निस्तेज बनने लगा। उसकी स्त्री और नंदक को ऐसा लगा कि यदि धनदेव इस प्रकार गलता जाएगा तो नौका किनारे पहुँचे उससे पहले ही यह निःशेष हो जाएगा।

धनदेव को भी इस अचानक आ पड़ी बीमारी का कारण कुछ समझ में नहीं आया। देह विषयक ममता अथवा आसक्ति जैसी तो पहले से ही इसे कुछ नहीं थी। जिस काल में जो होने का हो वह होता ही है ऐसा निश्चय कर शारीरिक अस्वस्थता को वह शांत भाव से सह रहा था।

परन्तु धनश्री की अस्वस्थता दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जाती थी। धनदेव का स्वास्थ्य जब से गिरा है तब से ही उसके मुंह पर का तेज उड़ गया था। धनदेव की ऐसी स्थिति करने में वह स्वयम् उत्तरदायी है इस तथ्य के प्रकट हो जाने के भय से वह सतत उद्विग्न और व्यग्र रहती थी। जहाज की छोटी

सी दुनिया में उसको दूसरे किसी से भी डर नहीं लगता था। परन्तु इसका अपना आत्मा ही जब विच्छू के से डंक मार रहा हो, वहां वह उल्लासपूर्वक कैसे रह सकती थी? धनदेव का अस्तित्व उसे कांटे के समान चुभ रहा था। नन्दक अनेक बार धनदेव के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाता था। परन्तु धनश्री को यह बात भी नहीं रुचती थी। एकांत मिलने पर वह नंदक को स्पष्ट शब्दों में कह देती कि मैं किसी भी प्रकार से इस धनदेव के पंजे में से छूटना चाहती हूं। सीधी रीति से यह विदा हो जाए तो ठीक है। अन्यथा मुझे स्वयं ही यह कांटा निकालकर फेंक ही देना होगा। नंदक इस कोमलांगी नारी-प्रकृति में छुपी हुई पैशाचिकता देख देखकर घबराता था।

एक आधी रात्रि को सागर पर अंधकार का ढकना छाया हुआ था। कुछ ही खतासियों के सिवा सब निद्रामग्न थे। दूर पर आने-जाने वाले जहाजों के दीपप्रकाश जुगनू की तरह चमक कर पीछे अंधकार में विलय हो जाते थे। धनदेव भी अर्धनिद्रा और अर्धजागृत अवस्था में पड़ा था। अपने घनिष्ट मित्र सागर् का गर्जन वह सुन रहा था। इतने में ही तो कोई दुःस्वप्न देखता हो और प्राचीन लोककथाओं में सुने उपद्रवों के तादृश्य स्वरूप का अनुभव कर रहा हो वैसे ही उसने दो हाथों का स्पर्श अपनी पीठ पर होता अनुभव किया। एक हाथ तो बहुत ही दुर्बल था परन्तु फिर भी वह अतिशय निर्भय था। मेरा बुरा कोई चिंतन भी करता है अथवा करता ही है ऐसी तो उसे शंका तक भी नहीं थी। वह अच्छी तरह निश्चय कर लेना चाह ही रहा था कि उसका देह अगाध सागर में डूबता उतराता हो ऐसा भीषण भान उसे हुआ। धनदेव अपने मित्र सागर का अतिथि बन गया। धनश्री और नंदक दोनों की राह उस दिन से निष्कंटक बन गया।

क्रमशः

संकलन——

# टूथपेस्ट का जहर

डॉ. कान्ति जैन

हमारा समाज – हमारा दैनिक जीवन हमारा – हमारा खानपान जहरीले परिवेश से ग्रस्त है। हम विषैले माहौल में जीने के अभ्यस्त होने के लिए अभिशप्त है। टूथपेस्ट एक आम चीज है जो घर का हर सदस्य सुबह उठते ही ब्रश में लगाकर दाँतों-मसूढ़ों पर रगड़ता है और मुख शुद्धि कर लेता है, परन्तु यह संभवतः कुछ ही लोगों को पता होगा कि टूथपेस्ट भी जहरीला और स्वास्थ्य का जानी दुश्मन है। कभी आप अपने दाँत के डॉक्टर से पूछें तो पता चलेगा कि टुथपेस्ट निगंल जाने पर कितनी बड़ी दुर्घटना हो सकती है। दो साल से छह साल के बच्चों के लिये केवल मटर के दाने जितना पेस्ट निकल जाने पर डॉक्टर या पायजन कंट्रोल सेंटर से संपर्क करना जरूरी है। बच्चों के ब्रशिंग तथा कुल्ला करने पर बहनें-माताएं पैनी नजर रखें। २ से ६ साल की उम्र के बच्चों के लिए अपने डेंटिस्ट या फिजिशियन से दाँत साफ करने के बारे में सलाह जरूर लें।

मेरे पास अमेरिका में बिकने वाले कोलगेट टुथपेस्ट का एर रैपर है। एक निर्देश और चेतावनी उस पर छपी है। यह चेतावनी कोलगेट टोटल, कोटगेट टार्टर कंट्रोल, कोलगेट वाइनिंग विथमेकिंग सोडा एंड पैराक्साइड कैवटी प्रोटक्शन जेल, कोलगेट कैविटी प्रोटेक्शन आदि सभी टूथपेस्टों पर स्पष्ट शब्दों से छापी जाती है–

"Keep your 2/6 year old child away - In case of mishappening consult your doctor immediately"

लेकिन इस तरह की कोई चेतावनी हमारे देश में नहीं छापी जाती- आखिर क्यों ? यह एक गंभीर मुद्दा है। आखिर यह हमारे बच्चों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वाला कैसा सुरक्षा चक्र है। और तो और अमेरिका में बिकनेवाले कोलगेट की तरह हिन्दुस्तान के कोलगेट पर एक्सपायरी डेट तक नजर नहीं आती।

वास्तव में विज्ञापनों के खूबसूरत मायाजाल ने हमें इस कदर फँसा दिया है कि हमने उचित-अनुचित का भेद करने की कोशिश ही छोड़ दी है। विज्ञापनों के सम्मोहन से वशीभूत होकर अमृत समझकर न जाने कौन-कौन सा धीमा जहर हम अपने शरीर में रोज-ब-रोज पेट में पहुँचा रहे हैं–यह हमें खुद भी नहीं मालूम। बाजार में बदलती इस संस्कृति और दुनियां में अब आदमी के स्वास्थ्य का कोई मतलब नहीं रह गया है। बड़ी-बड़ी खास बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ मोटे मुनाफे के लिये बड़े लुभावने तरीके से झूठ बोलकर हमें फँसा रही है और हम है कि धीरे-धीरे फँसते भी जा रहे हैं और गले तक फँस चुके हैं। अक्सर ऐसा होता है कि जिन चीजों को हमारे जीवन के लिये निहायत जरूरी बताया जाता है। यही हाल सौन्दर्य प्रसाधनों का भी है।

ऊपर तो सिर्फ कोलगेट का प्रमाण दिया है–लेकिन तमाम टूथपेस्ट भी कमोबेश ऐसे ही हैं। इने-गिने आयुर्वैदिक दंत-मंजन टूथपेस्ट छोड़ दिये जाएँ, तो ज्यादातर टूथपेस्टों की गुणवत्ता ऐसी है कि उन्हें मुँह में न लगाया जाए तो ही भलाई है। यूँ तो साँसों की बदबू मिटाने, दाँतों की सड़न रोकने के लिए और मसूड़ों को मजबूत बनाने के नाम पर टुथपेस्ट बेचे जाते हैं- - लेकिन कोई भी राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य परीक्षण संस्थापन ऐसे दावों की पुष्टि नहीं करता। टी.वी. पर विज्ञापनों के जरिये किसी भी प्रामाणिक संस्थान का नाम नहीं दिया जाता; बस एसोसिएशन का नाम दिया जाता है जो टूथपेस्ट बनाने वालों का ही है।

परीक्षणों से यह पता चला है कि कोलगेट जैसे तमाम टूथपेस्टों में कैलशियम डाइ फॉस्फेट के नाम पर मरे हुए जानवरों की हड्डियों का चूरा मिलाया जाता है। झाग पैदा करने के लिए नुकसानदेह सिंथेटिक डिटरर्जेण्ट तो मिलाया जाता ही है साथ ही आर्सेनिक सीमा और निकल जैसी खतरनाक भारी वस्तुओं की भी मात्रा इन टूथपेस्टों में मिली है। टूथपेस्ट से जेवरात साफ किये जाते है; गंदी मटमैली वस्तुएं धातु के बर्तन, चाँदी के बर्तन साफ किये जाते हैं। अब आप स्वयं सोच लीजिए ये टूथपेस्ट हमारे स्वास्थ्य के लिये कितने घातक हो सकते हैं? सेहत में घुन लगाने वाले ये धीमे जहर हमें धीरे-धीरे मौत के मुंह में और डॉक्टरों के चंगुल में फंसाने के दुष्चक्र हैं।

कोलगेट कंपनी हो या अन्य कोई बहुराष्ट्रीय कंपनी सभी झूठ बोलने में सौ प्रतिशत खरे उतरे हैं। इन टूथपेस्टों से मसूढ़ें और दाँत कमजोर हो जाते हैं। इनके स्थान पर नीम की दातौन, बबूल आदि प्रयोग करने वालों के दाँत अधिक स्थाई रहते हैं। साँसों की बदबू विटामिन सी की कमी पेट की गड़बड़ी तथा पानी की कमी जिम्मेदार है। ऐसा डॉक्टर कहते हैं।

क्या कोलगेट या टूथपेस्ट से पेट की गडबड़ी ठीक होती है या विटामिन सी मिलती है। कोई डॉक्टर इस तथ्य को क्या प्रमाणित कर पाएगा?

ज्यादातर टूथपेस्टों को डेंटिस्ट्स एसोसिएशन द्वारा प्रमाणित बताया जाता है, लेकिन इस एसोसिएशन का नाम रजिस्ट्रेशन नंबर, मुख्यालय का नाम नहीं बताया जाता। इसकी छानबीन करने पर पता चला कि हमारे देश में इस तरह की कोई डेंटिस्ट एसोसिएशन तो रजिस्टर्ड भी नहीं है। यदि कोई बिना पंजीकृत एसोसिएशन है भी तो वह कोलगेट कंपनी के अपने डॉक्टरों की है। सरे आम झूठ को सच की तरह दिन-रात टी.बी. द्वारा हमारे सामने परोसा जा रहै है–फिर भी न तो कोई जनहित याचिका की गई, न ही इसके खिलाफ कोई कार्यवाही ही हुई है।

भारतीय समाज को विज्ञापनों के जरिये आधुनिकता की पुरजोर सिफारिश की जा रही है। ये बहुर्राष्ट्रीय कंपनी की झूठ बयानी का सिर्फ एक नमूना है, जो अहिंसक समाज को बेवकूफ बनाकर उनकी अस्मिता और भारतीयता से खिलवाड़ कर रही है।

साभार– शाश्वत धर्म
अप्रेल २००५

**NAHAR**
**5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,**
**Kolkata - 700 020**
**Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757**

**BOYD SMITHS PVT. LTD.**
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

**KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA**
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

**M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY**
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

**SURANA MOTORS PVT. LTD.**
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

**SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA**
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

**ASHOK KUMAR RAIDANI**
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

**IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI**
**VINAYMATI SINGHVI**
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

**GLOBE TRAVELS**
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

**APRAJITA**
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

**DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)**
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

**LALCHAND DHARAMCHAND**
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

**TARUN TEXTILES (P) LTD.**
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

**AJAY DAGA, AJAY TRADERS**
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

**COMPUTER EXCHANGE**
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

**SUNDERLAL DUGAR**
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

**AMRITLAL & CO.**
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

**ARBEITS INDIA**
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

**PSCO**
**MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.**
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

**M/S. POLY UDYOG**
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

**SAROJ DUGAR**
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

**VEEKEY ELECTRONICS**
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

**KRISHNA JUTE COMPANY**
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

**ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.**
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

**BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA**
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

**MOUJIRAM PANNALAL**
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

**ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION**
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

**NAKODA METAL**
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

**MUSICAL FILMS (P) LTD**
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

**SAGAR MAL SURESH KUMAR**
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

**B.W.M.INTERNATIONAL**
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

**DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON**
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

**V.S. JAIN**
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

**RANJIT SINGHI**
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

**RAJIB DOOGAR**
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

***SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR***
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

**M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.**
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

**M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.**
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
**WITH BEST WISHES**

**DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA**
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

**DHANDHIA BROS**
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

**In the Sweet Memory of my mother**
**LATE SOVABOTI DUSAJ**
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

**With Best Compliment from :-**
**SURANA WOOLEN PVT. LTD.**
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

**In the memory of Badindrapat Singhji Dugar**
**GAUTAM DUGAR**
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

**ARIHANT JEWELLERS**
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

**M/s. MUKUND JEWELLERS**
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

**KAMAL SINGH KARNAWAT**
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

**N. K. JEWELLERS**
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

**RATAN LAL DUNGARIA**
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

**M/S. PARSON BROTHERS**
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

**KESARIA & CO.**
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
**INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES**
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

**M.L. CHOPRA & CO.**
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

**With Best Compliments From-**
**STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS**
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

**ABL INTERNATIONAL LTD.**
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

**SHIV KUMAR JAIN**
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

**MAHENDRA TATER**
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

**M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.**
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

**APARAJITA BOYED**
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

**SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI**
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

**BADALIA GEMS PVT. LTD.**
**BADALIA HOUSE**
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

**CREATIVE**
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

**JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS**
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

**DR. G. C. GULGULIA**
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

**CALTRONIX**
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

**PABITRA KUMAR DOOGAR**
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

**SHRI VIJAY NAHATA**
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
**Jyoti Kumar Kuthari**
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
**Ranjan Kumar Kuthari**
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

**With Best Compliments from :-**
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
**CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346**
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
**Garden Cafe Take Away :** Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
**Late Devi Singhji Kochar**
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar.

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

# KUSUM CHANACHUR

**Founder : Late. Sikhar Chand Churoria**

Kusum
QUALITY PRODUCT

## Our Quality Product of :

| | |
|---|---|
| Anusandhan | Bhaonagari Ghantia |
| Kolkata Nasta | Jocker |
| Badsha Khan | Lajawab |
| Picnic | Papri Ghantia |
| Raja | Rim Jhim |
| Shubham | Tinku |

**MANUFACTURED BY**

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

**KOLKATA ADDRESS:**

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

**THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED**

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

| | **Phone:** |
|---|---|
| Gram "GANGJUTMIL" | 2226-0881 |
| Fax: + 91-33-245-7591 | 2226-0883 |
| Telex: 021-2101 GANG IN | 2226-6283 |
| | 2226-6953 |

**Mill**

**BANSBERIA**

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

**BHANSALI**

Quality. Innovation. Reliability

**BHANSALI UDYOG PVT. LTD.**
**(Formerly: Laxman Singh Jariwala)**
**Balwant Jain** - Chairman

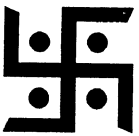

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

**मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।**

**अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।**

अनाम

# PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 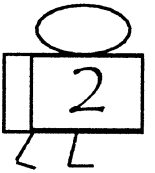 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

**NAHAR PARK**
**45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025**
**(Near Jadu Babu's Bazar)**
**Phone: 24544696**

**Store Timings : 7.00 am to 9pm**
**All days open except Thursday**

**FREE HOME DELIVERY**

**All Prices BELOW M.R.P.**

**PARKING AVAILABLE**

# 28 water supply schemes
# 315,000 metres of pipelines
# 110,000 kilowatts of pumping stations
# 180,000 million litres of treated water
# 13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

# SPML

**Engineering Life**

## SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us fo a lesson in reality.

**With Best Compliments**

B JAIN
JEWELLERS
Since 1926

# B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

**22, Camac Street**
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXIX. No. 6 TITTHAYARA September 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

**Kamal Singh Rampuria**
**Rampuria Mansions**

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225